शैक्षिक उपलब्धि – शोध साहित्य की विश्लेषणात्मक समीक्षा

Sonali Tiwari,
P.hD. Research Scholar, Jiwaji University, Gwalior MP

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने वर्तमान में चल रहे शोध कार्य **''माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्य प्रदेश एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अन्तर्गत अध्ययनरत ग्यारहवी एवं बारहवीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों तथा अभिरूचियों का तुलनात्मक अध्ययन''** में से शैक्षिक उपलब्धि चर पर गहन अध्ययन व समीक्षात्मक विश्लेषण किया है विश्लेषणात्मक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक उपलब्धियों के सन्दर्भ में पूरी जानकारी प्राप्त करना है जिसमें शैक्षिक उपलब्धि की परिभाषा उसका अर्थ, मापन करने की विधियाँ व अन्य शिक्षा विदों द्वारा किये गये शोध कार्यों का निष्कर्ष क्षेत्र में कक्षागत वातावरण में परीक्षा के समय आदि किस तरह अपनी भूमिका द्वारा छात्रों को लाभान्वित करता है। यह भी अपने आप में योगदान का बिन्दु है और इसका भी अध्ययन कर शोधार्थी अपने शोध विषय द्वारा कुछ नया व अनोखा देने का प्रयास कर रही है।

KEYWORDS

प्रस्तावना –

किसी भी शोध विषय को चुनने से पूर्ण यह अत्यन्त आवश्यक है कि उससे सम्बन्धित शोध साहित्य का अध्ययन तर्क पूर्ण तरीके से किया जाये इस तरह से किया हुआ अध्ययन निःसन्देह ही शोधार्थी को कुछ नया खोजने व एक ही विषय को अलग–अलग तरह से पढ़ने हेतु उत्सुक व प्रेरित करता है।

इस सन्दर्भ में गुड बार तथा स्केट्स का कहना है कि ''एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधिक सम्बन्धी आधुनिकतम खोजो से परिचित होते रहे उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिये भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।''

इसी सन्दर्भ में आगे बात की जाये तो यह स्पष्ट होता है कि किसी भी क्षेत्र के शोध साहित्य का सर्वेक्षण उस विषय की समस्याएँ क्या है इसे इंगित करता है जो निष्कर्ष अन्य शोध कार्यो से सामने आये है वह कितने अर्थ पूर्ण है यह पता लगाया जा सकता है व इसकी सहायता से परिकल्पनाओं का निर्माण करने में भी अत्यधिक सहायता प्राप्त होती है। समीक्षा करने पर शैक्षिक उपलब्धि के मापन की विधियाँ

भी समझ आ जायेगी व इस चर को सबसे अधिक वस्तुनिष्ठ ढंग से कैसे मापा जाये यह भी स्पष्ट हो जायेगा।

उपर्युक्त कथनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि शोध साहित्य की समीक्षा किसी महत्वपूर्ण, रूचिकर व किसी भी शोधार्थी के लिये कितनी चुनौतीपूर्ण भी है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने 800 छात्रों पर अध्ययन करने का उद्देश्य रखा है व सी0वी0एस0ई0 एवं एम0पी0 बोर्ड के छात्रों को अध्ययन हेतु चुना है भौगोलिक दृष्टि से मध्य प्रदेश के ग्वालियर शहर को चुना है।

- **सी. आर. परमेश (1973) " सृजनात्मकता व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन"**

  न्यायदर्श– 155 ऐसे छात्रों का चयन किया जिन्होंने हाई सेकेन्ड्री स्कूल परीक्षा पास कर ली थी।

  निष्कर्ष– निष्कर्ष रूप में ज्ञात किया कि सृजनात्मकता तथा विभिन्न ज्ञात विद्यालयीन विषयों में उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध पाया गया।

- **"Study of Creativity and Academic Achievement among Secondary School Children."**

  Sample- The sample consisted 400 male and 400 female students of class 10^{th} .

  Result- Asha found Positive and Significant relation between Creativity and Academic Achievement.

- **"Relationship between verbal creativity and academic achievement of students"**

  Findings – Academic achievement of students was positively and significantly related to the fluency flexibility and originality aspect of verbal Creativity.

- **सृजनात्मकता समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि के सामाजिक सांस्कृतिक कारकों का अध्ययन करना।"**

निष्कर्ष :–

उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों में सृजनात्मक उत्पादक क्षमता अधिक होती है और मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों में मौलिकतर अधिक पायी गयी।

4.इग्वेसी बी0एन0 (1986) – इनके शोध अध्ययन का शीर्षक **कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ द अकेडमिक अचीवमेण्ट ऑफ स्टूडेण्ट्स फॉम मोनागैमस एण्ड पॉलीगेमस फैमिली** था। इन्होंने न्यादर्श के रूप में 200 विद्यार्थियों का चयन किया। यह विद्यार्थी यादृच्छिक रूप से चुने गये जिसमें 100 मोनोगेमस फैमिली के थे। इनके अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि विद्यार्थियों की अभिरूचि और उनकी शैक्षिक उपलब्धि में परिवार का बहुत बड़ा योगदान होता है तथा मोनोगेमस फैमिली के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पॉलीगेमस विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है।

- **"Factors Affecting Academic Achievement of IX Standard Students in Mathematics."**

Findings-

1. Girls are high on achievement in mathematics and test anxiety than boys. But boys are high on July 2008 31 mathematical creativity than girls. No significant difference between boys and girls has been found on mathematical creativity and attitude towards mathematics.
2. English medium students are high on achievement in mathematics, mathematical creativity, attitude towards mathematics and achievement motivation as compared to Kannada medium students.
3. The students studying in aided schools are high on achievement in mathematics, mathematical creativity, test anxiety and achievement motivation when compared to government school.
4. Student of aided schools are high on achievement in mathematics, mathematical creativity, test anxiety, and achievement motivation as compared to students of government schools.
5. Students of unaided schools are high on mathematical creativity. Students of aided schools are high on attitude towards mathematics as compared to students of unaided schools.

- **"Academic Achievement of Secondary School Students in Relation to Their Intelligence and Attitude towards Schooling Process"**

Findings:

- The girls have been found to demonstrate superiority over boys in respect of their achievement in all the four levels of Intelligence. It is further noticed that at the highest level of Intelligence the achievement variation between boys and girls is marginal.
- No significant interaction effect of gender and intelligence has been found on the academic achievement of secondary school students.
- Intelligence, gender, attitude towards school subjects, school and teachers have been found to have significant independent effects on academic achievement of students of Secondary level.
- The order of the importance of variables in determining achievement for all the participants is Intelligence, Attitude towards school subjects, Attitude towards school, and, Attitude towards teachers with gender playing negligible role.

"A Comparative Study of Values, Intelligence and Academic Achievement of Students of UP, CBSE, and ICSE Board Schools,"

- The achievement of total students of CBSE Board has been found significantly higher than that of UP Board.

- No Significant difference has been found in the achievement of CBSE students and that of ICSE Board school students.
- The achievement of total students of ICSE Board has been found significantly higher than that of UP Board.
- The achievement of male students of CBSE Board has been found significantly higher than that of the male students of UP Board.
- The achievement of female students of ICSE Board has been found significantly higher than that of the female students of UP Board.
- No significantly higher than that of the female students of UP Board.
- No significant difference has been found in the achievement of students, intergender intra-Board.

"Vocational Interests and Academic Achievement of Secondary School Students at Different Levels of Creative Thinking Ability-A Comparative Study".

Findings-

The study was carried out with an attempt to find out how a particular age group with a fibre of high creative potential are differentiable from the ones who possess low level of creative ability on certain areas of vocational interests and academic achievement. A sample of 1000 students (700 boys and 300 girls) was selected from 26 secondary schools of Kashmir valley. Baquer Mehdi's Verbal Test of Creative Thinking Ability and Chatterji's Non-language Preference Record were used to collect the data. Following the criteria of top 25% (Q3) and bottom 25%(Q1), two extreme groups (high and low) were identified. Two way analysis of variance was used to find out the differences between these two categories. The findings revealed that the two groups have been seen to differ significantly on variables under investigation excluding academic achievement. Besides, gender differences could not be established.

- **नदीम एन0ए0 (अप्रैल 2014)** – इनके शोध अध्ययन का विषय **"स्टडी हैबिट इन्ट्रेस्ट अकेडमिक अचीवमेंण्ट ऑफ कश्मीरी एण्ड लद्दाखी एडोलसेन्स गर्लः अ कम्प्रेटिव स्टडी"** था। इन्होंने न्यादर्श के रूप में गवर्मेण्ट हायर सेकेण्डरी 12 वीं कक्षा की बालिकाओं का यादृच्छिक रूप से चुनाव किया, जिसमें 200 कश्मीरी तथा 200 लद्दाखी बालिकायें शामिल थीं। इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि कश्मीरी बालिकाओं की लद्दाखी बालिकाओं की तुलना में सीखने में अभिरूचि अधिक थी तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक हैं।

- **के. पी. शर्मा (2015)– "सृजनात्मकता समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि के समाजिक सांस्कृतिक कारकों का अध्ययन करना।"**

  न्यायदर्श– न्यायदर्श के रूप में 300 छात्रों का चयन किया गया।

  निष्कर्ष– उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है और मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों में प्रवाह तथा मौलिकता अधिक पायी जाती है।

"A Study of Relationship Between Mental Health and Academic Achievement of the Adolescents."

Sample – In the present study, a sample of 200 adolescents from different schools of Hoshiarpur district has been taken. Equal number of male and female adolescents from science and Arts streams has been included in the sample.

Findings :-

- There is a significant relationship between mental health and academic achievement of adolescent students.
- There is a significant relationship between mental health and academic achievement of male and female adolescent students.

"Study of Academic Achievement in Relation to Achievement Motivation and Gender."

Sample- The sample constituted of 120 students of 9^{th} Class of Moga district.

Findings:-

- The research concludes that there is no significant difference in boys and girls. There is significant difference in achievement motivation of boys and girls. There is no significant relationship between academic achievement and achievement motivation.

"Teaching Competence in Relation to Academic Achievement of Students Studying in Morarji Desai Residential Schools."

Findings:-

- Boys and girls do not differ significantly in respect of their academic achievement? How ever the mean scores of girls is greater than the boys.
- VIII and IX standard students do no differ significantly in respect of their academic achievement. The mean scores of urban students is greater than the rural students.
- There is a positive and significant relationship between teaching competence and academic achievement of IX standard students studying Morarji Desai Residential schools.
- There is a positive and significant relationship between teaching competence and academic achievement X standard students studying Morarji Desai Residential Schools.

"The Influence of Teaching Methods on Student Achievement of Learning Test for Algebra"

Findings-

- Dessertation submitted to the Faculty of the Virginia Polytechnic Institute and State University In partial fulfillment of the requirements for the degree of Doctor of Education in Educational Leadership and Policy Studies.
- Given Virginia's Standards of Learning (SOL)(1995) mandates, Virginia's Algebra I teachers and school leaders should utilize research for teaching methods; further, the relationship between teaching methods and student achievement on Virginia's End of Course SOL Test for Algebra I deserves investigation, since Virginia's students must pass this test to earn verified credit towards high school graduation.

किसी भी शोध साहित्य समीक्षा का उद्देश्य सम्बन्धित शोध में अनछुये पहलू हैं उन्हें ढूँढना, उनके ऊपर कार्य करना है। समीक्षा कमियों व अन्तर का सामने लाती है और शोध में नये तरीकों को अपनाने हेतु दिशा दिखाती है। किसी भी शोधकर्ता के लिये वर्तमान समय के अध्ययन हेतु पूर्व अनुसंधानों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस तरह के पूर्व अनुसंधानों एक आधारशिला की भाँति कार्य करते है। शोधा साहित्य की भिन्न–भिन्न प्रकार की समीक्षा कर ऐसे तथ्यों को उजागर किया जा सकता है जिन पर वर्तमान समय में कार्य करने की सबसे ज्यादा आवश्यकता है।

डब्ल्यू0आर0 बोर्ग के अनुसार – "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के सामान्य है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित है। यदि सम्बन्धित साहित्य भावी कार्य आधारित है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नीव को दृढ़ नहीं कर लेते हैं तो हमारा कार्य प्रभावहीन एवं महत्वहीन हो सकता है अथवा पुनरावृत्ति भी हो सकती है।

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उनके परिवार का बहुत योगदान होता है।
2. बालकों की शैक्षिक उपलब्धि भाषायी आधार पर या जाति के आधार पर भिन्न–भिन्न होती है।
3. अध्ययनकर्ता व अधिगमकर्ता की शैक्षिक उपलब्धि उसके लिंग से प्रभावित होती है।
4. छात्र–छात्राओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति का प्रभाव भी उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर अवश्य पड़ता है।

ज्ञान में अन्तर – विभिन्न प्रकार के शोध साहित्य से जुड़े शोध पत्रों का अध्ययन कर शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुँची है कि शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक मनोविज्ञान में एक अहम विषय है जो छात्रों की उनके विषय के प्रति लगन व मेहनत को निर्देशित करता है व यह भी पता लगाने में योगदान देता है कि वह आने वाले समय में क्या करेंगे। अतः शोधार्थी ने शैक्षिक उपलब्धि के चर के रूप में व उसके विभिन्न कारकों को अध्ययन हेतु चुना।

निष्कर्ष – शैक्षिक उपलब्धि से छात्र–छात्राओं की किसी भी विषय की उपलब्धि को मापा जा सकता है। शैक्षिक उपलब्धि बालक की शैक्षिक पृष्ठभूमि को प्रभावित करती है हालाँकि यह भी असत्य नहीं है कि बालक का मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य भी उसकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। भविष्य में किसी प्रकार के विषय को अध्ययन करने हेतु चुने व कैसे रोजगार को अपने जीवन का लक्ष्य बनावे इसमें शैक्षिक उपलब्धि का बहुत बड़ा हाथ होता है। अतः इस चर के विभिन्न कारकों के मापन अध्ययन से बालकों की विषय के प्रतिरूप व विकास के साथ–साथ उनकी शैक्षिक उपलब्धि इस प्रकार से या गति निर्धारित होगी। इसका भी पता लगाया जा सकता है। अभिरूचि, सृजान्तमक एवं शैक्षिक उपलब्धि में गहरा सकारात्मक सम्बन्ध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

बेस्ट जॉन डब्ल्यू :– रिसर्च एन एजूकेशन, प्रिन्ट्स हॉल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली – (1983)।

बुच0एम0बी0 :– फोर्थ सर्वे इन रिसर्च इन एजूकेशन एन0सी0आर0टी0, नई दिल्ली।

गुप्ता एस0पी0 :– अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।

गुप्ता एस0पी0 :– मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।

गुड, सी0वी0 :– हाउ टू डू रिसर्च इन एजूकेशन, कॉसमो पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।